

واژه‌نامه‌ی وجوه و نظایر در قرآن کریم

تألیف: ابن دامغانی

تحقیق: طلال سالم الحدیثی - عادل الدرّه

ترجمه: عبدالجبار غواصی

مقابله و ویرایش: مجید احمدی



انتشارات ابلاف

سرشناسه	: دامغانی، حسین بن محمد، - ۴۷۸ ق.
عنوان قراردادی	: القاموس القرآنی (الوجوه و النظائر فی القرآن الکریم). فارسی
عنوان و نام پدیدآور	: واژه‌نامه وجوه و نظائر در قرآن کریم / مؤلف ابن دامغانی؛ به تحقیق طلال سالم الحدیثی - عادل الدرّه؛ ترجمه عبدالجبار غوّاصی؛ مقابله و ویرایش مجید احمدی.
مشخصات نشر	: شیراز: ایلاف، ۱۳۹۸.
مشخصات ظاهری	: ۳۲۰ ص.
شابک	: 978-964-198-213-5
وضعیت فهرست‌نویسی	: فیبا
موضوع	: قرآن -- واژه‌نامه‌ها -- فارسی
موضوع	: Qur'an -- Dictionaries -- Persian
موضوع	: قرآن -- مسائل لغوی -- تحقیق
موضوع	: Qur'an -- Language, Style -- Research
موضوع	: قرآن -- اشیاء و نظائر
موضوع	: Qur'an -- Homonyms
شناسه افزوده	: غوّاصی، عبدالجبار، ۱۳۵۳ -، مترجم
شناسه افزوده	: احمدی، مجید، ۱۳۵۱ -، ویراستار
شناسه افزوده	: حدیثی، طلال سالم، ۱۹۳۴ - م.
شناسه افزوده	: درّه، عادل
رده‌بندی دنگ	: BP ۶۸
رده‌بندی دی‌سی	: ۱۳/۳۹۷۶
شماره کتابشناسی ملی	: ۵۸۷۳۲۹۴



انتشارات ایلاف

شیراز، خیابان فردوسی، نبش کوچه ۱۲، ساختمان شماره ۱۹، طاقه همکف،

تلفن: ۰۷۱-۳۲۳۴۹۳۱۷ - همراه: ۰۹۱۷۷۰۲۳۱۷۵

نام کتاب: واژه‌نامه‌ی وجوه و نظائر در قرآن کریم طرح جلد گروه گرافیک هفت

تألیف: ابن دامغانی ناشر: ایلاف

تحقیق: طلال سالم الحدیثی - عادل الدرّه شمارگان: ۱۰۰۰ نسخه

ترجمه: عبدالجبار غوّاصی نوبت چاپ: اول، پاییز ۱۳۹۸

مقابله و ویرایش: مجید احمدی قیمت: ۶۰۰۰۰ تومان

ISBN: 978-964-198-213-5

شابک: ۵-۲۱۳-۱۹۸-۹۶۴-۹۷۸

فهرست مطالب

۲۵.....	مقدمه‌ی مترجم.....
۲۷.....	مقدمه‌ی محققان.....
۳۳.....	سرآغاز.....
۳۵.....	باب «الهمزة».....
۳۵.....	[أب].....
۳۵.....	[أتی] [أتی].....
۳۷.....	[إثم] [إثم].....
۳۸.....	[أجر] [أجر].....
۳۸.....	[أجل] [أجل].....
۳۹.....	[أحد] [أحد].....
۳۹.....	[أخذ] [أخذ].....
۴۰.....	[أخذ] [أخذ].....
۴۲.....	[آخر] [آخر].....
۴۲.....	[أخو] [أخو].....
۴۳.....	[أذن] [أذن].....
۴۴.....	[أذی] [أذی].....
۴۵.....	[أرض] [أرض].....
۴۶.....	[أسف] [أسف].....
۴۶.....	[إفك] [إفك].....
۴۷.....	[أكل] [أكل].....
۴۸.....	[إلا] [إلا].....
۴۹.....	[إلی] [إلی].....

٤٩	[أَم]
٤٩	[أَم ر] أَمْر (١)
٥٠	[أَم ر] أَمْر (٢)
٥٢	[أُم]
٥٢	[أُمّة] أُمّة
٥٣	[إِمَام] إِمَام
٥٤	[أُمِّي] أُمِّي
٥٤	[أَمِن] أَمِن (١)
٥٤	[أَمِن] أَمِن (٢)
٥٥	[أَنْت] أَنْت
٥٥	[إِنْس] إِنْس
٥٧	[إِنْ-أَنْ-إِنَّ]
٥٧	[أَنْ ي] أَنْ ي
٥٨	[أَهْل] أَهْل
٥٨	[أَوْ]
٥٩	[أَوَّل] (١)
٥٩	[أَوَّل] (٢)
٦٠	[أَوَّل] (٣)
٦١	[أَوْى]
٦١	[أَي ي]
٦٣	«باب الباء»
٦٣	[بَ أَس] بَأس
٦٣	[بَ ح ر] بَحْر
٦٣	[بَ خ س] بَخْس
٦٤	[بَ د ل] بَدَل
٦٤	[بَ د ن] بَدَن
٦٥	[بَ ر ج] بَرَج

٦٥	[ب ر ح] برح
٦٥	[ب ر ر] برر
٦٦	[ب ر ق] برق
٦٦	[ب س ط] بسط
٦٧	[ب ص ر] بصر
٦٧	[ب ض ع] بضع
٦٧	[ب ط ش] بطش
٦٨	[ب ط ل] بطل
٦٨	[ب ع ث] بعث
٦٩	[ب ع ل] بعلا
٦٩	[ب غ ي] بغى
٧٠	[ب ق ي] بقي
٧٠	[ب ل د] بلد
٧١	[ب ل و] بلاء
٧١	[ب ر ه ن] برهان
٧١	[ب ن ي] بنى
٧٢	[ب ه ت] بهت
٧٢	[ب و أ] بوأ
٧٢	[ب و ب] بوب
٧٣	[ب ي ت] بيت
٧٤	[ب ي ع] بيع
٧٥	باب «التاء»
٧٥	[ت ب ت] تبث
٧٥	[ت ب ع] تبع
٧٦	[ت ر ب] ترب
٧٦	[ت ل ا] تلا
٧٧	[ت م م] تمم

٧٧	[ت و ب] توب
٧٩	باب «الشاء»
٧٩	[ث ب ت] ثبت
٧٩	[ث خ ن] ثخن
٨٠	[ث ق ف] ثقف
٨٠	[ث ق ل] ثقل
٨١	[ث م ر] ثمر
٨١	[ث م] ثم
٨٢	[ث ن م] ثنم
٨٢	[ث و ب] ثوب
٨٣	[ث و ي] ثوى
٨٣	[ث ي ب] ثيب
٨٥	باب «الحيم»
٨٥	[ج أ ر] جأر
٨٥	[ج ب ر] جبر
٨٥	[ج ب ل] جبل
٨٦	[ج ث و] جثو
٨٦	[ج ح م] جحم
٨٧	[ج د د] جدد
٨٧	[ج د ل] جدل
٨٧	[ج ذ ذ] جذذ
٨٨	[ج ر م] جرم
٨٨	[ج ز ء] جزء
٨٩	[ج س د] جسد
٨٩	[ج ع ل] جعل
٨٩	[ج م ل] جمل
٩٠	[ج ن ب] جنب

۹۰.....	[ج ن ح] جنح
۹۱.....	[ج ن د] جند
۹۱.....	[ج ن ن] جنّ
۹۲.....	[ج ه د] جهد
۹۲.....	[ج ی ب] جیب
۹۳.....	باب «الحاء»
۹۳.....	[ح ب ب] حَبّ
۹۳.....	[ح ب ر] حبر
۹۳.....	[ح ب ل] حبل
۹۴.....	[ح ت ی] حَتّ
۹۴.....	[ح ج ب] حجب
۹۵.....	[ح ج ج] حَجّ
۹۵.....	[ح ج ر] حجر
۹۶.....	[ح د ث] حدث
۹۶.....	[ح د د] حدّ
۹۶.....	[ح ذ ر] حذر
۹۷.....	[ح ر ب] حرب
۹۷.....	[ح ر ث] حرث
۹۸.....	[ح ر ج] حرج
۹۸.....	[ح ر ص] حرص
۹۸.....	[ح ر م] حرم (۱)
۹۹.....	[ح ر م] حرم (۲)
۹۹.....	[ح ز ب] حزب
۱۰۰.....	[ح س ب] حسب
۱۰۱.....	[ح س س] حَسّ
۱۰۲.....	[ح س ن] حسن
۱۰۲.....	[ح س ن ی] حسنی

١٠٢	[ح س ن] حسن و [س و ء] سوء
١٠٣	[ح ش ر] حشر
١٠٣	[ح ص ر] حصر
١٠٤	[ح ص ن] حصن
١٠٤	[ح ص ي] حصى
١٠٥	[ح ض ر] حضر
١٠٥	[ح ط ب] حطب
١٠٦	[ح ف ظ] حفظ
١٠٦	[ح ق] حق
١٠٧	[ح ك] حكم
١٠٧	[ح ل ل] حلل
١٠٨	[ح م د] حمد
١٠٩	[ح م ل] حمل
١١٠	[ح م م] حمم
١١٠	[ح و ط] حوط
١١٠	[ح و ل] حول
١١١	[ح ي ن] حين
١١١	[ح ي ي] حي (١)
١١٢	[ح ي ي] حي (٢)
١١٣	باب «الخاء»
١١٣	[خ ب ت] خبت
١١٣	[خ ت م] ختم
١١٣	[خ ر ج] خرج
١١٤	[خ ر ر] خرّ
١١٤	[خ ز ن] خزن
١١٤	[خ ز ي] خزي
١١٥	[خ س ر] خسر

۱۱۶	[خ ش ع] خشع
۱۱۶	[خ ط أ] خطأ
۱۱۶	[خ ط ف] خطف
۱۱۷	[خ ف ف] خَفَّ
۱۱۷	[خ ف ی] خفی
۱۱۸	[خ ل د] خلد
۱۱۸	[خ ل ف] خلف
۱۱۸	[خ ل ق] خلق
۱۱۹	[خ ل ل] خل
۱۲۰	[خ و ف] خوف
۱۲۰	[خ و ن] خون
۱۲۱	[خ ی ر] خیر
۱۲۳	باب «الدال»
۱۲۳	[د ب ب] دبّ
۱۲۳	[د ب ر] دبر
۱۲۴	[د ر ك] درك
۱۲۴	[د ع ا] دعا
۱۲۵	[د ن ا] دنا
۱۲۶	[د ه ن] دهن
۱۲۶	[د و ر] دور
۱۲۶	[د و ل] دول
۱۲۷	[د ی ن] دین
۱۲۹	باب «الذال»
۱۲۹	[ذ ر أ- ذ ر ر]
۱۲۹	[ذ ك ر] ذكر
۱۳۱	[ذ ل ل] ذلّ
۱۳۲	[ذ ه ب] ذهب

۱۳۲.....	[ذوت] ذوت
۱۳۳.....	[ذوق] ذوق
۱۳۵.....	باب «الراء»
۱۳۵.....	[رأى] رأى
۱۳۵.....	[رب ب] ربّ
۱۳۶.....	[رب و] ربو
۱۳۶.....	[رج ز] رجز
۱۳۶.....	[رج ع] رجع
۱۳۷.....	[رج ل] رجل (۱)
۱۳۸.....	[رج ل] رجل [رجال] (۲)
۱۳۹.....	[رج م] رجم
۱۴۰.....	[رج و] رجو
۱۴۰.....	[رج م] رحم (۱)
۱۴۱.....	[رج م] (۲)
۱۴۲.....	[رزق] ارزق
۱۴۳.....	[رس ل] رسل
۱۴۳.....	[رس ا] رسا
۱۴۴.....	[رش د] رشد
۱۴۴.....	[رع د] رعد
۱۴۴.....	[رف ع] رفع
۱۴۵.....	[رف ق] رفق
۱۴۵.....	[رق ب] رقب
۱۴۶.....	[رك ب] ركب
۱۴۶.....	[رك ع] ركع
۱۴۷.....	[رم ي] رمى
۱۴۷.....	[روح] رُوح
۱۴۷.....	[روح] رُوح

١٤٨.....	[رُوح] ريحان
١٤٨.....	[رى ب] ريب
١٤٩.....	[ري ح] ريح
١٥١.....	باب «الزاي»
١٥١.....	[زب را] زبر
١٥١.....	[زخ رف] زخرف
١٥٢.....	[زكا ا] زكا
١٥٢.....	[زل ل، زل] زل
١٥٣.....	[زوج] زوج
١٥٣.....	[زول] زوا
١٥٣.....	[زى د] زيد
١٥٤.....	[زى غ] زيغ
١٥٤.....	[زى ن] زين
١٥٥.....	باب «السين»
١٥٥.....	[س أل] سأل
١٥٥.....	[س ب ب] سيب
١٥٦.....	[س ب ح] سيج (١)
١٥٧.....	[س ب ح] سيج (٢)
١٥٧.....	[س ب ق] سيق
١٥٧.....	[س ب ل] سبل
١٥٩.....	[س ج د] سجد (١)
١٥٩.....	[س ج د] سجد (٢)
١٦٠.....	[س ح ر] سحر
١٦٠.....	[س خ ر] سخر
١٦١.....	[س رب ل] سربل
١٦١.....	[س رج] سرج
١٦١.....	[س رر] سَرَّ

١٦٢	[س ر ع] سرع
١٦٢	[س ر ف] سرف
١٦٣	[س ع ي] سعى
١٦٣	[س ف ر] سفر
١٦٤	[س ف ل] سفل
١٦٤	[س ف ه] سفه
١٦٤	[س ق ط] سقط
١٦٥	[س ك ر] سكر
١٦٥	[س ك ن] سكن
١٦٦	[س ن] سلطن
١٦٦	[س ل ف] سف
١٦٧	[س ل ك] سلك
١٦٧	[س ل م] سلم (١)
١٦٨	[س ل م] سلم (٢)
١٦٨	[س م ع] سمع
١٦٨	[س م و] سمو
١٦٩	[س م و] سمو (٢)
١٦٩	[س ن ه] سنه
١٧٠	[س و ع] سوء
١٧١	[س و ا ع] سواء
١٧١	[س و ر] سور
١٧٢	[س و ق] سوق
١٧٢	[س و ي] سوى (١)
١٧٢	[س و ي] (الإستواء) (٢)
١٧٣	[س ي أ] سيئ
١٧٤	[س ي د] سيد
١٧٤	[س ي ر] سير

۱۷۵.....	باب «الشین».....
۱۷۵.....	[ش ج ر] شجر.....
۱۷۶.....	[ش د د] شد.....
۱۷۶.....	[ش ر ب] شرب.....
۱۷۷.....	[ش ر ك] شرك.....
۱۷۷.....	[ش ر ی] شری.....
۱۷۷.....	[ش ط ط] شطط.....
۱۷۸.....	[ش ط ن] شطن.....
۱۷۸.....	[ش ع ر] شعر.....
۱۷۸.....	[ش ف ع] شفع.....
۱۷۹.....	[ش ف ا] شفا.....
۱۷۹.....	[ش ق ق] شق.....
۱۸۰.....	[ش ق ی] شقی.....
۱۸۰.....	[ش ك ر] شكر.....
۱۸۰.....	[ش ه د] شهد.....
۱۸۱.....	[ش و ی] شوی.....
۱۸۱.....	[ش ی ع] شیع.....
۱۸۳.....	باب «الصاد».....
۱۸۳.....	[ص ب ح] صبح (۱).....
۱۸۳.....	[ص ب ح] صبح (۲).....
۱۸۳.....	[ص ب ر] صبر.....
۱۸۴.....	[ص ح ب] صحب.....
۱۸۴.....	[ص د د] صد.....
۱۸۵.....	[ص د ع] صدع.....
۱۸۵.....	[ص د ق] صدق.....
۱۸۶.....	[ص ر ر] صر.....
۱۸۶.....	[ص ر ط] صرط.....

١٨٧.....	[ص ر ف] صرف
١٨٨.....	[ص ع ق] صعق
١٨٨.....	[ص غ ر] صغر
١٨٩.....	[ص ف ف] صفّ
١٨٩.....	[ص ل ح] صلح
١٩٠.....	[ص ل ي] صلى
١٩٠.....	[ص ي ح] صيح
١٩١.....	باب «الضاد»
١٩١.....	[ض - ن] ضحك
١٩١.....	[ض - ي] ضجى
١٩٢.....	[ض ر ب] ضرب
١٩٢.....	[ض ر ر] ضرر
١٩٣.....	[ض ع ف] ضعف
١٩٤.....	[ض ل ل] ضلّ
١٩٧.....	باب «الطاء»
١٩٧.....	[ط ر ف] طرف
١٩٧.....	[ط ر ق] طرق
١٩٧.....	[ط ع م] طعم
١٩٨.....	[ط غ ي] طغى (١)
١٩٨.....	[ط غ ي] طغى (٢)
١٩٩.....	[ط م ن] طمن
١٩٩.....	[ط ه ر] طهر
٢٠٠.....	[ط و ع] طوع
٢٠١.....	[ط و ف] طوف
٢٠١.....	[ط ي ب] طيّب
٢٠٢.....	[ط ي ب] طيّب
٢٠٣.....	[ط ي ر] طير

٢٠٥	باب «الظاء»
٢٠٥	[ظ ل ل] ظَلَّ (١)
٢٠٥	[ظ ل ل] ظَلَّ (٢)
٢٠٥	[ظ ل م] ظَلَمَ
٢٠٧	[ظ ل م ة] ظَلَمَةٌ
٢٠٧	[ظ ن ن] ظَنَّ
٢٠٨	[ظ ه ر] ظَهَرَ
٢٠٩	باب «العين»
٢٠٩	[ع ب د] عَبَدَ
٢٠٩	[ع ج ب] عَجِبَ
٢٠٩	[ع ج ز] عَجَزَ
٢١٠	[ع د د] عَدَّ
٢١٠	[ع د ل] عَدَلَ
٢١١	[ع د ا] عَدَا (١)
٢١١	[ع د ا] عَدَا (٢)
٢١١	[ع ذ ب] عَذَبَ
٢١٢	[ع ر ش] عَرَشَ
٢١٢	[ع ر ض] عَرَضَ
٢١٣	[ع ر ف] عَرَفَ
٢١٤	[ع ز ز] عَزَّ
٢١٤	[ع ز م] عَزَمَ
٢١٤	[ع ص ر] عَصَرَ
٢١٥	[ع ص ف] عَصَفَ
٢١٥	[ع ظ م] عَظَمَ
٢١٦	[ع ف ا] عَفَا
٢١٦	[ع ق ب] عَقَبَ
٢١٧	[ع ق م] عَقَمَ

٢١٧	[ع ل م] علم (١)
٢١٨	[ع ل م] علم (٢)
٢١٨	[ع ل ي] على
٢١٩	[ع م ي] عى
٢١٩	[ع ن د] عند
٢٢٠	[ع ن ق] عنق
٢٢١	[ع ه د] عهد
٢٢١	[ع و ر] عور
٢٢٢	[ع ي ن] عين
٢٢٣	باب «العين»
٢٢٣	[غ ر ف] غرف
٢٢٣	[غ ش ي] غشي
٢٢٤	[غ ف ر] غفر
٢٢٤	[غ ل ب] غلب
٢٢٤	[غ ل ل] غلّ
٢٢٥	[غ ل م] غلم
٢٢٦	[غ ي ب] غيب
٢٢٩	باب «الفاء»
٢٢٩	[ف ت ح] فتح (١)
٢٢٩	[ف ت ح] فتح (٢)
٢٢٩	[ف ت ن] فتن
٢٣٠	[ف ت ي] فتي
٢٣١	[ف ج ر] فجر
٢٣٢	[ف ح ش] فحش
٢٣٢	[ف ر ح] فرح
٢٣٢	[ف ر ر] فرّ
٢٣٣	[ف ر ش] فرش

۲۳۳	[ف ر ض] فرض
۲۳۴	[ف ر غ] فرغ
۲۳۴	[ف ر ق] فرق
۲۳۵	[ف س د] فسد
۲۳۶	[ف س ق] فسق
۲۳۶	[ف ص ل] فصل
۲۳۷	[ف ض ل] فضل
۲۳۷	[ف ك ه] فكه
۲۳۸	[ف ل ح] فليح
۲۳۸	[ف و ق] فرق
۲۳۹	[ف و ه] فوه
۲۳۹	[ف ي ض] فيض
۲۴۰	[ف ي] في
۲۴۱	باب «القاف»
۲۴۱	[ق ب ل] قبل (۱)
۲۴۱	[ق ب ل] قبل (۲)
۲۴۲	[ق ت ل] قتل
۲۴۲	[ق د ر] قدر
۲۴۳	[ق د م] قدم
۲۴۳	[ق ذ ف] قذف
۲۴۴	[ق ر ب] قرب
۲۴۵	[ق ر ر] قرّر
۲۴۶	[ق ر ع] قرع
۲۴۶	[ق س ط] قسط
۲۴۶	[ق ر ن] قرن
۲۴۷	[ق ر ی] قری
۲۴۸	[ق س م] قسم

۲۳۳	[ف ر ض] فرض
۲۳۴	[ف ر غ] فرغ
۲۳۴	[ف ر ق] فرق
۲۳۵	[ف س د] فسد
۲۳۶	[ف س ق] فسق
۲۳۶	[ف ص ل] فصل
۲۳۷	[ف ض ل] فضل
۲۳۷	[ف ك ه] فكه
۲۳۸	[ف ل ح] فلاح
۲۳۸	[ف و ق] فوق
۲۳۹	[ف و ه] فوه
۲۳۹	[ف ي ض] فیض
۲۴۰	[ف ي] فی
۲۴۱	باب «القاف»
۲۴۱	[ق ب ل] قبل (۱)
۲۴۱	[ق ب ل] قبل (۲)
۲۴۲	[ق ت ل] قتل
۲۴۲	[ق د ر] قدر
۲۴۳	[ق د م] قدم
۲۴۳	[ق ذ ف] قذف
۲۴۴	[ق ر ب] قرب
۲۴۵	[ق ر ر] قرر
۲۴۶	[ق ر ع] قرع
۲۴۶	[ق س ط] قسط
۲۴۶	[ق ر ن] قرن
۲۴۷	[ق ر ی] قری
۲۴۸	[ق س م] قسم

٢٤٨	[ق ص ر] قصر
٢٤٩	[ق ص ص] قصص
٢٤٩	[ق ض ي] قضى
٢٥٠	[ق ط ع] قطع
٢٥١	[ق ع د] قعد
٢٥٢	[ق ل ب] قلب
٢٥٣	[ق ل ل] قلّ
٢٥٣	[ق ل م] قلم
٢٥٣	[ق ن ت] قنت
٢٥٤	[ق و م] قوم (١)
٢٥٤	[ق و م] قوم (٢)
٢٥٥	[ق و م] قوم (٣)
٢٥٦	[ق و م] قوم (٤)
٢٥٦	[ق و ي] قوى
٢٥٧	باب «الكاف»
٢٥٧	[ك ب ت] كبت
٢٥٧	[ك ب ر] كبر (١)
٢٥٨	[ك ب ر] كبر (٢)
٢٥٨	[ك ت ب] كتب (١)
٢٥٨	[ك ت ب] كتب (٢)
٢٥٩	[ك ذ ب] كذب
٢٦٠	[ك ر م] كرم
٢٦٠	[ك ر ه] كره
٢٦١	[ك س ب] كسب
٢٦١	[ك س و] كسو
٢٦٢	[ك ف ر] كفر
٢٦٢	[ك ف ل] كفّل

٢٦٣	[ك ل م] كلم (١)
٢٦٣	[ك ل م] كلم (٢)
٢٦٤	[ك ن ز] كنز
٢٦٤	[ك ن ن] كن
٢٦٤	[ك و ن] كون
٢٦٥	[ك ي د] كيد
٢٦٧	باب «اللام»
٢٦٧	[لام مكسوره]
٢٦٧	[ل ب س] لبس
٢٦٧	[ل س ن] سن
٢٦٨	[ل ع ن] لعن
٢٦٩	[ل ع ل] لعل
٢٦٩	[لغو] لغو
٢٦٩	[ل ق ي] لقي (١)
٢٧٠	[ل ق ي] لقي (٢)
٢٧١	[لوح] لوح
٢٧١	[ل م ا] لما
٢٧٢	[لهو] لهو
٢٧٢	[لولا] لولا
٢٧٣	[ل و م] لوم
٢٧٣	[لا] لا
٢٧٣	[لات] لات
٢٧٥	باب «الميم»
٢٧٥	[م ت ع] متع
٢٧٥	[م ث ل] مثل
٢٧٦	[م د د] مدّ
٢٧٦	[م د ن] مدن

٢٧٧	[م ر أ] مرأ
٢٧٨	[م ر ض] مرض
٢٧٨	[م ر ي] مری
٢٧٨	[م س س] مس
٢٧٩	[م س ك] مسك
٢٧٩	[م ش ی] مشی
٢٨٠	[م ط ر] مطر
٢٨٠	[مع] مع
٢٨١	[م ك ث] مكث
٢٨١	[م ك ر] كركر
٢٨١	[م ل ك] ملك
٢٨٢	[من] من
٢٨٣	[م ن ن] من (١)
٢٨٣	[م ن ن] من (٢)
٢٨٤	[م ه د] مهد
٢٨٤	[م و ت] موت
٢٨٥	[م و ه] موه
٢٨٥	[م و ر - م ي ر] مور-میر
٢٨٧	باب «النون»
٢٨٧	[ن ب ت] نبت
٢٨٧	[ن ج م] نجم
٢٨٧	[ن ج و] نجو
٢٨٨	[ن د ی] ندی
٢٨٩	[ن ذ ر] نذر
٢٨٩	[ن ز ع] نزع
٢٨٩	[ن ز ل] [ن ذ ریل]
٢٩٠	[ن س ي] نسي

۲۹۱	[ن ش أ] نشأ
۲۹۱	[ن ش ر] نشر
۲۹۱	[ن ش ز] نشز
۲۹۲	[ن ص ب] نصب
۲۹۲	[ن ص ر] نصر
۲۹۲	[ن ظ ر] نظر
۲۹۳	[ن ع م] نعم
۲۹۴	[ن ف س] نفس
۲۹۵	[ن ف ق] نفق
۲۹۶	[ن ق ب] نقب
۲۹۶	[ن ك ح] نكح
۲۹۶	[ن ه ر] نهر
۲۹۷	[ن و ر] نور (۱)
۲۹۸	[ن و ر] نار (۲)
۲۹۸	[ن و س] نوس
۳۰۱	باب «الهاء»
۳۰۱	[ه ج ر] هجر
۳۰۱	[ه د ي] هدى (۱)
۳۰۱	[ه د ي] هدى (۲)
۳۰۳	[ه ل] هل
۳۰۳	[ه ل ك] هلك
۳۰۳	[ه ن أ] هنا
۳۰۴	[ه و ن] هون
۳۰۴	[ه و ی] هوی
۳۰۵	باب «الواو»
۳۰۵	[و ج د] وجد
۳۰۵	[و ج ه] وجه

۳۰۶.....	[و د د] و د
۳۰۶.....	[و د ی] و د ی
۳۰۷.....	[و ذ ر] و ذ ر
۳۰۷.....	[و ر د] و ر د
۳۰۸.....	[و ر ی] و ر ی
۳۰۸.....	[و ز ر] و ز ر
۳۰۸.....	[و ز ع] و ز ع
۳۰۹.....	[و س ط] و س ط
۳۰۹.....	[و س ع] و س ع
۳۱۰.....	[و ض ع] و ض ع
۳۱۰.....	[و ط ء] و ط ء
۳۱۱.....	[و ف ی] و ف ی (۱)
۳۱۱.....	[و ف ی] و ف ی (۲)
۳۱۲.....	[و ق ع] و ق ع
۳۱۲.....	[و ق ی] و ق ی
۳۱۳.....	[و ک ل] و ک ل
۳۱۳.....	[و ل ی] و ل ی (۱)
۳۱۳.....	[و ل ی] و ل ی (۲)
۳۱۴.....	[و ل ی] و ل ی (۳)
۳۱۵.....	[و ه ب] و ه ب
۳۱۷.....	باب «الیا»
۳۱۷.....	[ی ء س] ی ء س
۳۱۷.....	[ی د و] ی د و
۳۱۷.....	[ی س ر] ی س ر
۳۱۸.....	[ی ق ن] ی ق ن
۳۱۹.....	[ی م ن] ی م ن
۳۱۹.....	[ی و م] ی و م

مقدمه‌ی مترجم

امروزه همه از بحران حرف می‌زنند؛ بحران فرهنگی، بحران اقتصادی، بحران اجتماعی و به ویژه بحران اخلاقی که جهان را و حتی امت اسلامی را فرا گرفته است، و متأسفانه در جهان اسلام نوک اتهام متوجه قرآن است، این در حالی است که مسلمانان به درستی به قرآن عمل نمی‌کنند و قرآن ناآشنا‌ترین کتابی است که در طاقچه‌ی خانه‌ی مسلمانان قرار دارد و اگر با آن آشنا هستند، این آشنایی، بسیار سطحی و در حد تقدس و تبرک است. خداوند جامعه‌ای را برپا می‌کند، توسعه، امنیت و اخلاق وعده داده است که مردم آن، زیر سایه‌ی قرآن زندگی نمایند و ادعای زیستن با قرآن بدون تدبیر و تعقل در آن امکان‌پذیر نیست.

قرآن گفت‌و شنود است بین خدا و انسان، و خداوند در قرآن متکلم وحده نیست بلکه گاهی می‌گوید و گاهی می‌شنود و گاهی می‌پرسد و گاهی پاسخ می‌دهد. بدین معنا که در بعضی آیات قرآن، خدا سخن می‌گوید و انسان می‌شنود و در آیات دیگر، انسان سخن می‌گوید و خدا می‌شنود.

اسلوب سخن بین خدا و انسان در قرآن متفاوت است؛ گاهی بین خدا و انسان سخنی با نرمی، گاهی با توبیخ و تهدید و گاهی با انتقاد و سرزنش همراه است.

قرآن دستورالعمل زندگی، زندگان است و مربوط به انسان‌ها در همین دنیا و برای همین دنیاست و مردگان مخاطب قرآن و مکلف به آن نیستند. مخاطب قرآن عقل انسان‌هاست و مردمی که در قرآن تعقل نمی‌ورزند، تغییر، تحول و توسعه‌ای نیز در زندگی آنان رخ نخواهد داد.

بنده در راستای آشنایی عمیق و تدبیر در قرآن اقدام به تألیف و ترجمه‌ی تعدادی از کتب در حوزه‌ی پژوهش‌های قرآنی نموده‌ام که یکی از آن‌ها کتاب پیش روست که امیدوارم مفید واقع گردد.

قابل ذکر است که در کتاب اصلی (متن عربی) برای هر کدام از وجوه معانی کلمه‌ی قرآنی، غالباً چندین آیه به عنوان شاهد آورده بود که در ترجمه‌ی حاضر برای پرهیز از طولانی شدن صفحات کتاب، به یک شاهد بسنده شده است.

بر خود لازم می‌بینم که از برادر ارجمندم آقای عبدالصمد جاوید که در کار ویرایش با من همکاری کردند و نیز از آقای عادل دشتی که در حروفچینی کتاب مرا یاری دادند و نیز مدیریت محترم انتشارات ایلاف، آقای مجید احمدی که خود کار مقابله و ویرایش نهایی آن را پذیرا شدند صمیمانه تشکر نمایم.

عبدالجبار غواصی ۱۳۹۷/۰۳/۱۲

Email: ghawasi53@gmail.com

www.ketab.ir